ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 268-272

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

# महाभारत में नैतिकता की अवधारणा

**Hu Rui**

**हू रुई**

एशोसिएट प्रोफेसर– हिन्दी विभाग, वाईस डीन, फैकल्टी ऑफ एशियन एण्ड अफ्रीकन स्टडीज,

ग्वांगडोंग यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, ग्वांगडोंग (चीन)

**Received- 24.07.2020, Revised- 26.07.2020, Accepted - 29.07.2020 E-mail: 904950606@qq-com**

***सारांश :*** ***संस्कृत महा काव्य महाभारत प्राचीन भारतीय साहित्य का एक अत्यंत ही पुरातन एवं अनुपम विश्व कोशीय ग्रन्थ है। महाकाव्य व्यापक रूप से भारतीय जीवन शैली का लोकन कराता है तथा विश्व समाज जीवन एवं नैतिकता पर जन मानस की दृष्टि कोण को दिखाता है, जिसका भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस शोध आलेख में महाकाव्य में सन्निहित नैतिक अवधारणाओं को तीन भाग प्रकृति, परिवार और समाज में विभाजित करते हुए निहित नैतिकमानकों का विश्लेषण तथा पारंपरिक चीनी नैतिकमानकों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।***

***कुंजीभूत शब्द– भारतीय महाभारत, नैतिक अवधारणाय, महाकाव्य, जन मानस, गहरा प्रभाव, महाकाव्य ।***

महाभारत प्राचीन भारत के दो महान महाकाव्यों में से एक है। भारतीय विद्वान राजगोपालचारी ने लिखा है , "एक व्यक्ति जब तक रामायण और महाभारत का अध्ययन नहीं करता है , वह भारतीय जीवन शैली को नहीं समझ सकता है। "दुसरे शब्दों में कहा जाय तो दोनों महाकाव्य पूर्ण रूप से भारतीय अध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन शैली को दर्शाते हैं, विश्व, जीवन तथा नैतिकता पर दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, इन दोनों महाकाव्यों को "भारत की आत्मा" कह सकते हैं। वास्तव में, महाभारत के शोध के माध्यम से, हम न केवल उपर्युक्त विषयों का अध्ययन कर सकते हैं, बल्कि भारत की पारंपरिक नैतिकता तथा भारतीय संस्कृति को समझ सकते हैं।

**१. सार्वभौमिक नैतिकता–** अत्यंत प्राचीन काल से, भारतीय लोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति अति संवेदनशील हैं।हिंदू संत विभिन्न माध्यमों से आम लोगों के बीच पर्यावरणीय नैतिकता का प्रचार करने का प्रयास करते रहे हैं, चेतावनी देते रहे हैं कि प्रकृति का शोषण न करें और प्रकृति के विरुद्ध शत्रुता पूर्ण गतिविधियों को प्रतिबंधित किया जाय। महाभारत में कई स्थानों पर प्रकृति के प्रति दायित्व के विषय में कई मानवीय नैतिक जिम्मेदारीयों का वर्णन है जिसमें मानव और पशु के सहस्तिव और प्रकृति के प्रति नैतिक अवधारणा प्रतिबिंबित होती है। मानव को प्रकृति की प्रत्येक वस्तु का आदर ,पूजा तथा समुचित देखभाल करनी चाहिए।

**२. विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति समानता–** महाभारतमें विश्व के समस्त प्राणियों के प्रति समानता का भाव परिलक्षित होता है। जीवन तत्त्व की दृष्टि से स्थावर,जंगम तथा शस्य सभी समान है अर्थात पशु , वनस्पति तथा मानव सभी का जीवन समान रूप से महत्वपूर्ण है। वनपर्व में सरस्वती जी यमराज से कहती हैं"मनसा ,वाचा ,कर्मणा समस्त प्राणियों के प्रति उदारतापूर्ण दयालु व्यवहार ही सज्जन लोगों का चिरस्थायी धर्म है। "क्रोध का परित्यागकरने वाला, सत्यनिष्ठा का पालन करने वाला , समस्त प्राणियों को अपने समान समझने वाला ही इस पवित्र भूमि के समस्त भोगों का आनंद ले सकता है।

पांडव अज्ञातवास के समय वन में निवास कर रहे थे, एक दिन पांडुपुत्र युधिष्ठिर सोते समय स्वप्न में हिरणों के एक झुण्ड को देखा जो पांडवों को वन से बहार जाने के लिए आग्रह कर रहे थे, क्योंकि पांडवों को वन में रहते हुए बहुत समय हो गया था, पांडव अपने भोजन के लिए जंगल के वनस्पतियों पर निर्भर थे, पांडवों द्वारा वनस्पतियों के लगातार प्रयोग के कारण वन को हानि पहुँच रही थी पांडवों को अपनी गलती का बोध हुआ और अपनी त्रुटी को सुधारते हुए उनहोंने जंगल छोड़ने का निर्णय लिया, जंगल पर वन के प्राणियों का अधिकार है, मानव उनका यह अधिकार नहीं छीन सकता। पांडवों को "सभी प्राणी एक समान है" के विचार मर्म पता था और मानव धर्म का पालन करते हुए पांडु पुत्र धर्मराज युधिष्ठिर अपने अनुजों के साथ वन छोड़ देते है। महाभारत में उल्लिखित इस कथा के माध्यम से प्रकृति के प्रति नैतिक विचार तथा मनुष्य एवं पशु पक्षी, वनस्पति समेत सभी प्राणियों के अस्तित्व के समान अधिकार का विचार परिलक्षित होता है।

**३. जीव हत्या नहीं करने की नैतिक अवधारणा–** महाभारत सदियों से नैतिकता के सार्वभौमिक ज्ञान से जन सामान्य को प्रभावित करता आ रहा है,जीव हत्या नहीं करना महाभारत के सबसे महत्वपूर्ण विचारों में

**अनुरूपी लेखक**

से एक है महाभारत में "सभी प्राणियों के प्रति सद्भावना रखना" सबसे बड़ा धर्म कहा गया है।

महाकाव्य की दृष्टिकोण से प्रत्येक प्राणी को अपने–अपने कर्मो के अनुसार तीन मार्ग प्राप्त होते हैं, मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म, स्वर्ग की प्राप्ति तथा पशु योनि में जन्म जो प्राणी दयालु है, जीव हत्या नहीं करते हैंए वे इस नश्वर संसार से निकल कर स्वर्ग को प्राप्त होते हैं । जीव हत्या करने वाला निश्चित रूप से पशु योनि को प्राप्त होता है ८ "यदि एक व्यक्ति तृष्णा और क्रोध से भरा हुआ है, हत्या और लालच में लिप्त हैएतो वह मानव योनि को खो देगा तथा पशु योनि को प्राप्त होगा। " साथ ही निचले स्तर के पशु अपने शुभ कर्मों के द्वारा मानव योनि को प्राप्त कर सकते हैं, तथा गौ और अश्व आदि जीव शुभ कर्मों के द्वारा देव योनि को भी प्राप्त हो सकते है ।सभी प्राणी इन तीन मार्गों का अनुसरण करते हैं तथा इस शाश्वत सिद्धांत का पालन करते हैं।"

महाभारत में पशुओं को हानि पहुँचाने वालों की निंदा की गई है । महाभारत के विराट पर्व में ब्रह्मर्षि व्यास ने भृगु ऋषि की कहानी का वर्णन किया है जिसमें एक छिपकली भृगु ऋषि से कहती है कि मुनियों को जीव हत्या नहीं करनी चाहिए। "ब्राह्मण को किसी भी परिस्थिति में जीव हत्या नहीं करनी चाहिए। "महाकाव्य में एक बहेलिया अपने कुकर्मों पर ग्लानी करता है : "मैंने सभी व्यवसायों का परित्याग करते हुए बहेलिया का कार्य चुना ! मैं निश्चित रूप से एक बहुत ही अधम व्यक्ति हूँ !"

महाकाव्य में जीव हिंसा की निंदा करते हुए कहा गया है कि मांस खरीदने वाला मांस खरीदते समय व्यवहार में हिंसा करता है, मांस खरीदने वाला और मांस बेचने वाला दोनों समान रूप से पाप के अधिकारी है। सभी प्रकार के मांस बेचने वाले, मांस खरीदने वाले, कसाई और मांस खाने वाले सभी ने "जीव हत्या नहीं करने " के विचार का उलंघन किया है। भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को अहिंसा के चार अभिव्यक्तियों का वर्णन किया है, अर्थात विचार,वाणी,व्यवहार और भोजन में हिंसा का पूर्णतः परित्याग, भीष्म पितामह ने मांसाहार के व्यवहार को रोकने के रोकने के लिए मांसाहारी भोजन के दुष्परिणामों का वर्णन भी किया है।

अहिंसा के सिद्धांत की रक्षा तथा प्रकृति सरंक्षण के लिए महाभारत में राजाओं और शासकों को न्याय और नैतिकता का पालन करने के लिए कहा गया है। वनपर्व में महाराज शिबी की कहानी का वर्णन है जब एक कपोत एक चील से बचते हुए उनके शरण में आता है, तब महाराज शिबी कपोत के मांस के वजन के बराबर का मांस अपने शरीर से काट कर चील को देते है। यहाँ पर महारज शिबी जनमानस को बताना चाहते हैं कि राजा का कर्तव्य सभी प्राणियों की रक्षा करना है। युद्ध के समय में भी युद्ध क्षेत्र को खेती योग्य भूमि और वनों से दूर रखना चाहिए, क्योंकि इससे जंगल में रहने वाले जीवों और खेती की भूमि को हानि पहुंचेगी।

**४. पारिवारिक नैतिकता–** ४.१ वैवाहिक नैतिकता को बढ़ावा देना महाकाव्य में तीन प्रकार के वैवाहिक संस्कार का वर्णन है तथा तीनों नैतिक रूप से सही है : बहुपत्नी विवाह, बहुपति विवाह तथा एक पति एक पत्नी विवाह परन्तु महाकाव्य में बहुपत्नी विवाह का उदहारण सबसे अधिक देखने को मिलता है। महाकाव्य में अधिकतर राज पुरुषों की एक से अधिक पत्नियाँ है , जैसे पांचों पांडवों की एक से अधिक पत्नियाँ हैं। जाति व्यवस्था के अंतर्गत वैवाहिक व्यवस्था बहु पत्नी विवाह की प्रथा को आगे बढ़ाती है। मूल यह है कि जाति के अनुसार विवाह के विभिन्न रूपों को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। परन्तु साथ ही महाकाव्य में महाकवि ने अनेक विशिष्ट कहानियों के माध्यम से एक पतिव्रत पत्नीव्रत के नियम पर भी जोर दिया है, जैसे सत्यवानसावित्री तथा नल दमयंती एक पतिव्रत के श्रेष्ठतम उदहारण हैं। पतिव्रत के वर्चस्व के महाकाव्य युग में एक पति एक पत्नी का उदहारण यद्यपि अपेक्षाकृत कम है परन्तु महाकाव्य में वर्णित इन विशिष्ट कहानियों ने कालांतर में भारत में वैवाहिक प्रथा के नैतिक आदर्श को बहुत अधिक प्रभावित किया है। सफल विवाह के लिए आवश्यक है कि उच्च वर्ण का पुरुष निम्न वर्ण की कन्या से शादी करे। परन्तु निम्न वर्ण के पुरुष का उच्च वर्ण की कन्या के साथ विवाह को प्रतिबंधित माना गया है। भीष्म पितामह का वचन है : ब्राहमण चारों वर्णों की कन्या से विवाह कर सकता है, क्षत्रिय ब्राहमण कन्या को छोड़कर अन्य तीनों वर्णों की कन्या से विवाह कर सकता है, वैश्य ब्राहमण और क्षत्रिय कुल की कन्या को छोड़कर अन्य दोनों वर्णों की कन्या से विवाह कर सकता है, लेकिन शुद्र वर्ण के पुरुष को केवल शुद्र वर्ण की कन्या से ही विवाह करने की अनुमति है।

**४.२ स्त्री नैतिकता को बढ़ावा देना–** महाकाव्य में "पति का स्थान पत्नी से ऊँचा है" के विचार का प्रमुखता से समर्थन किया गया है। स्त्री नैतिकता का पहला सिद्धांत है कि पत्नी अपने पति को भगवान समझे, पत्नी को प्रत्येक परिस्थिति में अपने पति के प्रति निष्ठावान रहते हुए पतिव्रता धर्म का पालन करना चाहिए। महाभारत में द्रौपदी कहती हैः "पति भगवान है तथा पत्नी पति की मार्ग, कौन पत्नी अपने पति को अप्रिय करने वाला कार्य करना चाहेगी ? मैं भोजन से लेकर शयन तक अपने पति के इच्छा अनुसार

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

कार्य करती हूँ, यहाँ तक कि और बोलती भी हूँ तो उनकी इच्छा अनुसार "भले ही पति में सभी प्रकार के दोष हो, पति ने सभी प्रकार के अनैतिक कार्य किये हो लेकिन पत्नी को सर्वदा बिना कोई शिकायत किये अपने पति की सेवा करनी चाहिए।

"पत्नी का पतिव्रता होना" महाभारत में वर्णित एक महत्वपूर्ण वैवाहिक अवधारणा है, साथ ही पति—पत्नी के मध्य प्रेम एवं सामंजस्य का प्रमाण है, तथा पारिवारिक सामंजस्यता का आधार है। महाभारत की प्रमुख महिला पात्र जैसे गांधारी, द्रौपदी, सावित्री आदि नारियां अपने पतियों को बहुत प्रेम करती है तथा उनके प्रति पूर्ण निष्ठा रखती है। गांधारी अपने नेत्रहीन पति धृतराष्ट्र के पति निष्ठा प्रकट करने के लिए अपनी आँखों पर पट्टी बाँध लेती है और नेत्र होते हुए भी जीवनपर्यंत नेत्रहीन का जीवन जीती हैं। द्रौपदी अपने आँख वाले पतियों द्वारा द्यूतक्रीड़ा में स्वयं हार जाने के निर्णय का पालन किया और तेरह वर्षों के अज्ञातवास में जंगल में अपने पतियों का साथ दिया, तथा महाभारत के धर्मयुद्ध के बाद पांडवों द्वारा सिंहासन त्यागने के उपरांत अपने पतियों का अनुकरण करते हुए हिमालय पर्वत साधना करने चली गयीं ८ "स्त्री नैतिकता" के अनेक मानक हैं, जैसे धैर्य, शौर्य ,सशक्त और तप आदि द्रौपदी के चरित्र के माध्यम से हम महिलाओं के अनेक महान चरित्र को देखते हैं : वीरता, सहिष्णुता, निष्ठा और ज्ञान का अद्भुत संयोजन।

**४.३ माता—पिता एवं भाईयों के प्रति नैतिकता का सिद्धांत—** सर्वप्रथम, हमें मातादृपिता का आज्ञाकारी होना चाहिए। चीन में कन्फ्यूशियसवाद के विचार भी माता—पिता एवं भाईयों के प्रति नैतिकता पूर्ण आचरण पर विशेष जोर देता है, कन्फ्यूशियसवाद का मानना है कि माता—पिता एवं भाई मनुष्य बनने तथा सीखने की नीवं है महाभारत में भी माता—पिता तथा भ्राताओं के के प्रति नैतिक आचरण के कई उदहारण परिलक्षित होते है।

परिवार में मातादृपिता तथा पुत्र दृपुत्री के मध्य का सम्बन्ध पारिवारिक सम्बन्धों का सबसे महत्वपूर्ण भाग है मातादृपिता और संतान के मध्य का नैतिक आचारदृविचार माता—पिता और बच्चों के मध्य के सम्बन्ध को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण मापदंड है , मातादृपिता को निश्चित रूप से अच्छे अपनी संतानों का लालन पालन करना चाहिए। महाभारत में महर्षि वेद व्यास जी ने महाराज ययाति तथा उनके पांच पुत्रों की कथा का वर्णन किया है। कथा में महाराज ययाति का कनिष्ठ पुत्र ही अपने पिता की खुशी के लिए उनको अपना यौवन देने को सहर्ष तैयार होता है। महाराज ययाति कहते हैं "संतों का मानना है कि जो लोग अपने पिता की अवज्ञा करते हैं, वे पुत्र नहीं हैंय जो लोग माता—पिता के आदेशों का पालन करते हैं और अपने माता—पिता के हित के लिए कार्य करते हैं तथा नियमों का पालन करते हैं वास्तव में वे ही पुत्र हैंय पुत्र वो है जो माता दृपिता के प्रति एक पुत्र की तरह ही व्यवहार रखे। "यहाँ पर इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि पुत्र को माता—पिता के आदेश का पूर्ण पालन करना चाहिए तथा मातादृपिता को भी अपनी संतानों के लिए एक आदर्श उदाहारण प्रस्तुत करना चाहिए। महाभारत का यह विचार निःसंदेह पारंपरिक चीनी दर्शन से पूर्णतः अनुकूल है। चीन के महान दार्शनिक कन्फ्यूशियस ने "तीन नियम तथा पांच शील" का विचार दिया था जिसके अनुसार तीन नियम के अंतर्गत प्रजा को शासक का, पुत्र को पिता का, तथा पत्नी को पति के आदेशों का पालन करना चाहिए पञ्च शील के अंतर्गत परोपकार, धार्मिकता (पवित्रता), शिष्टता, ज्ञान एवं निष्ठा आते हैं।

देवव्रत महराज शांतनु और गंगा देवी के पुत्र थे जो हस्तिनापुर के सिंहासन के वास्तविक उतराधिकारी थे परन्तु कालान्तर में महाराज शांतनु निषाद कन्या सत्यवती से प्रेम कर बैठे , लेकिन देवी सत्यवती के पिता ने विवाह के लिए सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न पुत्र को ही राजसिंहासन के उतराधिकारी होने का शर्त महाराज शांतनु के समक्ष रखा, परन्तु महाराज शांतनु इस शर्त को स्वीकार करने में असमर्थ थे और प्रेम वियोग में उदास रहने लगे प्देवव्रत ने अपने पिता की प्रसन्नता के लिए राजसिंहासन छोड़ने और आजीवन ब्रह्मचारी रहने की भीष्म प्रतिज्ञा की जिसके कारण कालांतर में वे "भीष्म" के नाम से जगप्रसिद्ध हुए।

दूसरा, महाकाव्य में भाईयों के मध्य के प्रेम, सामंजस्य और आदर को दिखाया गया है। महाभारत में पांचो पांडवों के मध्य आपसी प्रेम ,सहयोग एवं एक दुसरे के प्रति सम्मान का बोध था , आपसी सामंजस्य , नैतिक बोध के अभाव में पांडवों को कौरवों का हराना संभव नहीं था। पाँचों पांडव एक दुसरे का सहयोग एवं आदर करते थे। ज्येष्ठ पांडव युधिष्ठिर अपने चारों अनुजों के प्रति प्रेम एवं करुणा का भाव रखते थे, स्वयं कठिन परिश्रम करते हुए उनका उचित मार्गदर्शन करते थे तथा सदैव उनकी सहायता के लिए तत्पर रहते थे, वहीँ उनके चारों अनुज अपने अग्रज का सम्मान करते हुए उनकी आज्ञा का पालन करते थे। अज्ञातवास के समय वन में चारों अनुज अपने अग्रज के साथ रहे एवं प्रत्येक बाधा विघ्नों का एक साथ सामना किए।

महाभारत का भीषण रक्तपात वाला धर्मयुद्ध पांडवों

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

ने अपने चचेरे भाइयों के साथ लड़ा ⁸ यद्यपि पांडु पुत्र युधिष्ठिर भाईयों में सबसे बड़े होने के कारण उनके मन में अपने दुश्मन चचेरे भाईयों के प्रति कोई दुराव नहीं था, उनमें उनको क्षमा करने का गुण था। धर्मराज युधिष्ठिर परिवार में सद्भाव एवं एकता बनाये रहने के लिए, शांति स्थापित करने के लिए हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर से अपना वैध अधिकार भी छोड़ने के तत्पर थे, बदले में उन्होंने दुर्योधन से केवल पांच ग्राम की मांग की, लेकिन युद्ध के मद में लीन दुर्योधन युद्ध की विभीषिका को समझ नहीं सका और महाभारत के युद्ध को अवश्यंभावी बना दिया। यहाँ कहा जा सकता है कि दुर्योधन का आचरण अग्रज बनने के अनुरूप नहीं था, ना ही उसे पता था कि अपने भाईयों को एकजुट कैसे करना है, भाईयों का सम्मान कैसे करना है, क्षमा कैसे करना है,जो की भाईयों के मध्य के नैतिक ज्ञान के अभाव को दर्शाता हैतथा इसी कारण अंततः दुर्योधन का समूल नाश हो गया।

**५. जनसामन्य के प्रति नैतिकता का नियम–** महाभारत का मूल हस्तिनापुर के राजसिंहासन प्राप्त करने के लिए हुए युद्ध की कहानी है ,लेकिन महाभारत में साथ ही बहुत सारे सामाजिक जीवन में होने वाले समस्यायों का भी सुन्दर वर्णन है। महाकाव्य में धर्मयुद्ध के माध्यम से जाति व्यवस्था, महिला समस्या और युद्ध के वर्णन के माध्यम से गहरी और समृद्ध सामाजिक नैतिकता को दिखाया गया है।

**५.१ सामाजिक व्यवस्था–जाति व्यवस्था का पालन–** ईसा पूर्व पंद्रहवी शताब्दी में "वैदिक काल" में भारत में वर्ण व्यवस्था का जन्म हुआ। महाभारत में वर्ण व्यवस्था का मंडन करते हुए उसका बचाव किया गया है। महाभारत में चारों वर्णों एवम उनके कर्तव्यों का वर्णन है। महाकाव्य के वर्णन के अनुसार, यद्यपि क्षत्रिय राज्य के शासक है लेकिन सर्वोच्च अधिकार ब्राहमण के पास है जो वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत असमान पेशेवर स्थिति को दर्शाता है। वर्ण व्यवस्था को बनाये रखना एवं उसका पालन करना सामाजिक एवं नैतिक व्यवस्था का एक मुख्य अंग बन गया।

वनपर्व में महाराज ययाति कहते हैं "चारों वर्णों की उत्पति एक ही शरीर से हुई है , सभी सुन्दर है ! परन्तु सभी का अपना अपना धर्म है,अपना अपना गुण है। चारों वर्णों में सबसे श्रेष्ठ ब्राह्मण है⁹ महाभारत में कर्ण क्षत्राणी कुंती के पुत्र थे, लेकिन उनका लालन–पालन एक सूतपुत्र के रूप में हुआ , कर्ण को हर प्रकार का अपमान और भेदभाव सहना पड़ा, महाकाव्य में ब्राहमण को सभी वर्णों में श्रेष्ठ बताया गया है , ब्राह्मण सेवा से समस्त पापों से विमुक्त हुआ जा सकता है। भिक्षा स्वीकार करते समय सबसे अच्छी वस्तु पर ब्राह्मण का अधिकार होता है । ब्राहमण का जीवन सभी वर्णों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है ।

**५.२ गुरु का सर्वोच्च स्थान–** "गुरु का सर्वोच्च स्थान" महाभारत के नैतिक अवधारणाओं में महत्वपूर्ण है । धौम्य ऋषि के शिष्य उपमन्यु की कथा "गुरु ब्रह्मा" के विचार की पुष्टि करता है। उपमन्यु धौम्य ऋषि के आज्ञाकारी शिष्यों में प्रमुख थे । वह कई बार कठिन से कठिन गुरु परीक्षा से गुजरा लेकिन गुरु भक्ति नहीं छोड़ा , नहीं गुरु के प्रति उनकी श्रद्धा और अहोभाव में लेशमात्र भी अंतर पड़ा एक बार उपमन्यु जंगल में आश्रम की गौओं को चराकर आने के क्रम भूख के कारण आक के पत्ते खा लिया और अपनी आँखों की रोशनी खो दिया, आँखों से नहीं दिखने के कारण वह एक कुएं में गिर गया , धौम्य ऋषि उपमन्यु को खोजते हुए पहुंचे तो उपमन्यु की स्थिति जानकर उसे देववैद्य अश्विनीकुमारों की आराधना करने को कहा , अश्विनीकुमार प्रसन्न हुए और दावा रूप में उपमन्यु को पुआ खाने को दिया , जिसे उपमन्यु ने यह कह कर खाने से मना कर दिया कि "गुरु की आज्ञा के बिना मैं नहीं खा पाउँगा।"

**५.३ अन्य नैतिक गुण**

सर्वप्रथम दयालुता नैतिकता का मूल है। महाकाव्य में ज्येष्ठ पांडु पुत्र युधिष्टिर धर्मराज के अवतार थे , जबकि ज्येष्ठ कौरव दुर्योधन (सुयोधन) अधर्म के प्रतिनिधि थे। उन दोनों के मध्य का युद्ध भी धर्म और अधर्म के मध्य का युद्ध था महाभारत में अच्छाई पर अधिक जोर दिया गया है, देखने में भले ही बुराई बलशाली दिखे परन्तु अंततः विजय धर्म की ही होती है । प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों के साथ मित्रतापूर्ण अच्छा व्यव्हार करना चाहिए , समाजिक जीवन का यही नैतिक सिद्धांत है जिसका हम सभी को पालन करना चाहिए । कर्ण दुर्योधन के अच्छे एवं मित्रतापूर्ण व्यवहार के कारण ही उसके तरफ से युद्ध में भाग लिया और दुर्योधन के लिए मृत्यु का वरण भी किया । पांडव भी अज्ञातवास के समय अपने अच्छे आचरण के माध्यम से अनेक मित्र बनाये। महाभारत में बहुत से सर्वमान्य गुणों का भी वर्णन है जैसे दया, सहिष्णुता, निष्पक्षता और निष्ठा, धर्म युद्ध के कठिन समय में भी सहिष्णुता, निष्ठा और दयालुता आदि विशिष्ट गुण महाभारत में जीवित रहे है। इंद्र ने कहा है : "सहनशीलता, कर्तव्य परायणता, निष्ठा और दया सबसे बड़े गुण हैं।"

**निष्कर्ष–** महाभारत एक सर्वमान्य विश्वकोश है । महाकाव्य में परिलक्षित नैतिक अवधारणा बहुत ही समृद्ध है , महाकाव्य ने मानव के लिए एक बहुत ही समृद्ध अनुभव


PIF/5.002 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

छोड़ा है । यद्यपि महाभारत में कई मानक है जो समकालीन समाज की नैतिकता और मानवता के विपरीत है , जैसे पति का पत्नी से ऊँचा स्थान , जाति व्यवस्था आदि ।

इस आलेख का उद्देश्यमहाभारतमें वर्णित वास्तविक नैतिक अवधारणाओं को पुनर्स्थापित करना तथा मूल साहित्य के अनुसार विश्लेषण करना है, शोध एवं सन्दर्भ की दृष्टि से हमें निश्चित रूप से ध्यान देना चाहिए । यद्यपि महाभारत में परिलक्षित बहुत सारी नैतिक अवधारणायें समकालीन समाज के नैतिक वातावरण पर अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है। महाकाव्य में पतिदृपत्नी के मध्य सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध, भाई और भाई के मध्य सामंजस्य और प्रेम आज भी समकालीन समाज में पारिवारिक निर्माण और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण महत्व रखते हैं।

दया, सहिष्णुता, न्याय, दया तथा निष्ठा जैसे नैतिक मानदंड अभी भी लोगों और समाज के मध्य संबंधों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण नियम है। महाकाव्य में प्रकृति के साथ समानता पर जोर दिया गया है, हमें प्रकृति, पर्यावरण विनाश, और पारिस्थितिक असंतुलन को दूर करने के लिए मानक प्रतिमान दिया गया है, पर्यावरण संरक्षण और मनुष्य और प्रकृति के सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान है। कहा जा सकता है कि महाभारतमें वर्णित नैतिक अवधारणा प्राचीन काल से वर्तमान तक मानव के लिए उपयोगी है आगे भी मानव के ल्लिये उपयोगी रहेगा ।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. JiXianlin and Liu Anwu, editors: [Compila tion of the Two Epic Reviews in India], Beijing: China Social Sciences Press, 1984.
2. Jin Kemu ,Chinese,: [Analysis of the Wedges of the Indian Epic "Mahabharata", "Foreign Literature Research", third edition, 1979.
3. Liu Anwu, Chinese,: The Death and Life of God and Man-Reading Notes of the Great Indian Epic [Mahabharata], Foreign Litera ture, 2nd Edition'1998.
4. Vyas, Indian,: [Mahabharata], translated by Huang Baosheng and GuoLiangjun, China Social Sciences Press, 2005.
5. Vyas, Indian,: [Mahabharata], translated by Jin Kemu, Zhao Guohua and Xi Bizhuang, Beijing: China Social Sciences Publishing house, 2005.
6. Manu, Indian,: [The Law of Manu], trans lated by Jiang Zhongin, China Social Sciences Press, 1986.
7. Huang Xinchuan,Chinese,: [History of Indian Philosophy], Commercial Press, 1989.
8. Shang Huipeng, Chinese,: [History of Indian Culture], Guangi Normal University Press, 2007.

लेखक परिचय दृ प्रोफेसर हू रुई (भ्न त्नप) चीन के क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के दक्षिण एशियाई भाषा व साहित्य विभाग में हिंदी भाषा के एसोसिएट प्रोफेसर है तथा एशियाई एवम अफ्रीकी भाषा व् संस्कृति संकाय के उप दृसंकायाध्यक्ष हैं । क्वान्तोंग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना का श्रेय इन्हें प्राप्त है,विभिन्न शोध पत्रिकाओं में भारतीय संस्कृति,दर्शन ,हिंदी भाषा एवं साहित्य पर अनेक शोध आलेख प्रकाशित।

*****